पाठ 8

चलव खेल खेलबो

पाठ परिचय– लइका मन ल खेलइ–कुदइ बने लागथे। कइसनो बेरा–कुबेरा, घाम–छाँव, जाड़–सीत चाहे पानी बरसत राहय, ओमन खेले बर नइ छोड़ँय। भूख लागही तभो सँगी–सँगवारी मन सँग खेलहिच। जुरमिल के खेलइ बने बात आय। खेल म हार–जीत होबेच करथे, फेर हार जाए म दुख झन मानय। कोनो किसम के छल–बल करके जीत जाय ले हार जाय तेने बने।

मुँधियार होतेच खंभा मन के लट्टू मन बग–बग ले बरगे। तहाँ ले बिमला ह गुलाबो, चमेली, आरती, बबलू, अमित ल गोहार पार के बलइस ''आवव अँधियारी–अँजोरी खेलबो''। ओहा घर के चौरस चौरा म आके ठाड़ होगे।

थोरकेच म लइका मन बिमला के तीर म आगे। ओहा लइका मन ल पूछिस– ''चलव बतावव, आज सबले पहिली का खेल खेलबो''? सबो कलेचुप होगे। बिमला फेर पूछिस। त गुलाबो कहिस–''बिल्लस खेलबो''। बबलू कहिस–''चलव खुडुवा खेलबो''। आरती किहिस ''चलव नूनसूर खेलबो''। जे लइका ते ठन खेल के नाँव बतइन।

त बिमला कहिस–'' चलव आज हमन अँधियारी–अँजोरी खेलबो''। अतका म आरती किहिस–''बिमला हमन तो ए खेल खेल डरबो फेर ए रीता ह नइ खेल सकय। एला बताय बर लगही। त आन लइका मन पूछिन–''रीता ह कोन ए आरती''?

ओ कहिस ''ए ह मोर ममा के बेटी आय। एमन मुम्बई म रहिथें।'' बिमला कहिस – ''आरती , तभे मँय ह गुनत रेहेंव, ए नवा सँगवारी ह कोन आय?'' चल खेलत–खेलत हमन रीता ल ए खेल ल सिखो देबो।''

तहाँ ले बिमला कहिस– ''देखव बहिनी हो ! मँय हा अँधियारी ..... कइहूँ तहाँ ले दँउड़ के

शिक्षण संकेत– गाँव के लइका मन कोन–कोन खेल खेलथें? ऊँकर बारे म चर्चा करँय। गुरुजी लइका मन ले खेल अउ ओकर जिनिस मन के सूची बनवावँय। पत्र–पत्रिका म छपे फोटू ल सकेले बर काहँय। खेल फोटू जमा करावँय। संज्ञा–सर्वनाम, विशेषण के अवधारणा (मायने) करावँय।

जउन–जउन मेर अँधियार हे तउन–तउन मेर जाके ठाड़ हो जहू। कहुँ अंजोरी कइहूँ त अँजोर मेर जाके ठाड़ हो जहू।

रीता पूछिस – ''दीदी ! मेहा कहुँ झट कन नइ जा पाहूँ त का होही ? बिमला कहिस दाम देवइया ह तोला छू दिही, तहाँ ले तोला दाम दे बर परही। तँय ह देखबे, कोन अँधियार म खड़े हे? कोन अँजोर म खड़े हे ?''

आरती कहिस –''चलव आज मँय ह दाम देवत हँव।'' अउ चिल्लइस ''अँधियारी''.....। ''तहाँ सबो लइका मन झटकन अँधियार जघा म जा के ठाड़ होगे। फेर रीता हा अँजोर म ठाड़े रहिगे। हुरहा दउड़े बर ओला नइ सूझिस।

तहाँ ले आरती ह झटले रीता ल छू दिस। ओहा रीता ल कहिस– ''चल अब तँय ह दाम दे।'' त रीता ह दाम दीस। कभू अँधियारी काहय त कभू अँजोरी काहय। लइका मन झटले जघा पोगरा लँय। अड़बड़ बेर होगे, रीता कोनो ल नइ छू सकिस। ओ हा थक गे।

बिमला कहिस–''चलव अब दूसर खेल खेलबो। कइसे रीता, तोला खेल बने लगिस ? ''बिमला बहिनी! मँय ह भले ए खेल म आज हार गेंव, फेर मोला खेल बने लगिस।''

''काबर बने लगिस तेला बता तो रीता। तेंहा तो मुम्बई शहर म आनी–बानी के खेल खेलत होबे ?''

''देख बिमला बहिनी, हमर शहर के लइका मन किसम–किसम के खेल भले खेलथें। फेर ओमा दुनिया भर के डमडमा हे। ओकर बर अलगे जघा चाही। खेल के जिनिस बिसा, सँगवारी खोज। खेल सिखइया घलो लगथे। ओला फीस तको देय बर लगथे।'' रीता कहिस।

''रीता बहिनी, हमर गाँव के खेल मन ल खेले बर सुभिता होथे। कइ ठन खेल मन म काँही जिनिस नइ लागय। सिरिफ बोल बता के, गीत गाके, दउड़ भाग के, छू के खेल लेथन । बिमला अतका कहिस तहाँ ले बबलू किहिस–''दीदी, तुमन तो गोठियाय बताय बर धर लेव। चलव ''अटकन–बटकन'' खेलबो।

हव बबलू ! चलव इही ल खेलबो। काबर के ठाड़े–ठाड़े खेलत ले गोड़ ह पिरा गे हे। बिमला ह किहिस तहाँ ले सबो झन दुनो हथेरी ल पट रखिन। आरती ह एक–एक झन के हथेली उपर अपन माई अँगरी ल छुवावत ए दे गीत के एक–एक आखर ल गाइस–

अटकन–बटकन दही चटाका ?
लउहा लाटा बन के काँटा।
सावन मा बुंदेला पाके,
पाका–पाका बेल खाबो।
बेल के डारा टूट गे,
भरे कटोरा फूट गे।
चल–चल बेटी गंगा जाबो,

गंगा ले गोदावरी।
आठ नाँगा पागा,
गोलार सिंग राजा।

सब झन बड़ खुश हो गें ।

त चमेली ह रीता ल कहिस–''कइसे रीता! तोला हमर संग खेले म बने लगथे?'' ''हाँ चमेली बहिनी! मोला तो तुँहर खेल मन बनेच लागथे। फेर का करबे शहर के लइका मन आनी– बानी के खेल म भुलाय रहिथें।'' रीता ह कहिस ।

''सुन रीता ! अब तो हमर राज म कइ ठन खेल मन ल स्कूल के खेल म रख ले गेहे।'' बिमला ह बताइस। ''कोन खेल ल दीदी ?'' बबलू ह पूछिस। ''तँय ह नइ जानस ?''

बिमला कहिस अउ बताइस–''फुगड़ी ल। ये खेल ल खेले म बड़ निक लागथे।

रीता कहिस–''चलव फुगड़ी खेल के देखाववं''। जम्मो झन उखरु बइठगें अउ अपन एक हाँथ ल भुइयाँ म लिपे सरिख गोल–गोल रेंगावत ए दे गीत ल गइन –

गोबर दे बछरू गोबर दे,
चारो खूँट ल लीपन दे ।
चारो देरानी ल बइठन दे,
अपन खाथे गूदा–गूदा।
हमला देथे बीजा.....।
ए बीजा ल का करबो,
रहि जाबो तीजा।
तीजा के बिहान दिन,
घरी–घरी लुगरा।
पींव पींव करे मजूर के पिला,
हेर दे भउजी कपाट के खीला।
एक गोड़ म लाल भाजी,
एक म कपुर।
कतेक ल मानँव मँय देवर–ससुर।।
फुगड़ी फुहूँ रे–फुगड़ी फू....।

बबलू बीचे म ढलँग गे, ओकर फुगड़ी पूरा नइ होइस। चमेली, आरती अउ बिमला मन फुगड़ी म बिधुन होगे, तहाँ ले अमित कहिस.. चलव दीदी। अब जादा रात होगे। हमर दाई–ददा खिसियाहीं।''

रीता ल ''फुगड़ी'' खेल बने लगिस। ओहा बिमला ल पूछिस– ''इहाँ अड़बड़ किसम के खेल हे का ? ''त बिमला ह बताइस–'' रीता, इहाँ कई किसम के खेल हे। जइसे भोटकुल, तिरी पासा, खीला गड़उल, डंडा–पचरंगा, घोड़ा हे बादाम छाई, चूरी लुकउल, सगा–पहुना, रामचिड़िया, खुडवा, छू–छूवउल, रस्सी, पोसमपाय, राजा–रानी, बिस–अमरित, नदी–पहाड़, गोबर, डंडा सूर, चर्रा, कुकरा पाल।''

ओतके म रीता के मामी ओला खोजत आगे। बियारी के बेरा होगे राहय। काली संझा फेर सकलाबो कहिके लइका मन अपन–अपन घर कोती दउड़गें।

कठिन शब्द मन के हिन्दी मायने –

मुँधियार	=	अँधेरा हो जाना
बग–बग	=	चमचमाते
अँजोरी	=	उजाला
कलेचुप	=	चुपचाप
गुनत	=	सोचते हुए
झटकन	=	जल्दी
हुरहा	=	अचानक
बिधुन	=	मगन
सबो	=	सभी
लउहालाटा	=	जल्दबाजी
पाका	=	पक्का
मेकरा	=	मकड़ी
देरानी	=	देवर की पत्नी
गूदा	=	फलों का वह नरम भाग, जिसे खाया जाता है।
लुगरा	=	साड़ी
खिसियागे	=	क्रोधित हो गया/गई

प्रश्न अउ अभ्यास

गतिविधि–

कक्षा के दू दल ओसरी–पारी मुँहअखरा प्रश्न उत्तर करही। तेखर पाछू गुरुजी घलो, दूनो दल के लइका मन ले प्रश्न पूछही। प्रश्न अइसे हो सकथें :–

(क) लइका मन ल जादा बने का लगथे – खेलइ के पढ़इ ?

(ख) 'अटकन बटकन' खेल म भुइयाँ म का ला मढ़ाथे – हथेली ल के कोहनी ल ?

बोध प्रश्न–

प्रश्न (1) ये प्रश्न मन के जवाब लिखव–

(क) लइका मन पहिली का खेलिन ?

(ख) अँधियारी–अँजोरी खेल कइसे खेले जाथे ?

(ग) 'फुगड़ी' ल कइसे खेले जाथे ?

(घ) अटकन–बटकन के खेल कइसे खेले जाथे ?

प्रश्न (2) तुमन अपन सँगवारी सँग का–का खेल खेलथव? कोनो तीन खेल के नाँव लिखव।

प्रश्न (3) ये प्रश्न के जवाब लिखव –

(क) खेल म हार जाए ले तुमन ल कइसे लागथे? ओतका बेरा तुमन का सोचथव ?

(ख) खेल म तुमन जीत जाथव त तुमन ल कइसे लागथे ? ओ समे म तुमन का सोचथव?

(ग) खेल खेलत बेरा जीत हार जादा महत्तम के होथे के खेलइ ? कारन बतावव।

भाषा अध्ययन अउ व्याकरण

प्रश्न 1– ए शब्द मन कस अउ दूसर शब्द लिखव–

जइसे – दल – बल, चल

गोहार – .....।

खेलत – .....।

दाम – .....।

गुनत – .....।

प्रश्न 2– ये शब्द मन के उल्टा अर्थ वाले शब्द लिखव–

अँधियार – .....।

झटकन – .....।

पाका – .....।

हार – ..... ।

अड़बड़ – ..... ।

बने – ..... ।

पूरा – ..... ।

पढ़व, समझव अउ लिखव –

(क) आरती ह पहिली दाम दिस।

(ख) ओहा थोरिक म थक गे।

(ग) ओहर कहिस, ''मँय ह थक गेंव।''

(घ) बबलू ह कहिस, ''तँय ह बइठ जा।

लकीर खिंचाय शब्द मन ल ध्यान लगा के देखव, 'ख' वाक्य मे 'ओहा' शब्द के प्रयोग 'आरती' बर होय हे। 'ग' वाक्य म 'ओहर' अउ 'घ' वाक्य में 'तँय ह' शब्द घलोक आरती बर प्रयोग करे गे हे। कहूँ सबो जघा ''आरती'' शब्द के प्रयोग होतिस त वाक्य बने नइ लगतिस। देखव :–

'आरती' ह पहिली दाम दिस। 'आरती' थोरिक में थक गे। 'आरती' ह कहिस– ''आरती तो थक गे।'' बबलू कहिस– ''आरती बइठ जा।' वाक्य मन ल सुग्घर बनाए बर 'ओहा' 'ओहर' 'तँय हा' 'ओखर' के प्रयोग होय हे। 'संज्ञा' के बदला म प्रयोग करे गे शब्द ह 'सर्वनाम' कहाथे।

प्रश्न (3) खाल्हे म लिखाय वाक्य मन के खाली जघा म ओहा, ओहर, ओला, ओखर शब्द लिखव–

रीता अटकन–बटकन खेलत रहिस।

..... अपन हथेली ल भुइयाँ म मड़इस।

..... पहिली बेर एला खेलत रहिस।

..... खेले बर नइ आवत रहिस।

..... हथेली घलोक पुक गे।

प्रश्न (4) खाल्हे के शब्द मन के मायने नइ लिखे हे। ओखर मायने कोष्टक ले छाँट के लिखव–

दाम देना = ... ।

उखरू = ... ।

गोहार = ... ।

निक = ... ।

(पंजा के भार, माड़ी मोर के बइठई, चिल्लई, बने, खेल ल आगू बढ़ाना)

समझव –

(क) बिमला चौरस चौरा म ठाड़ होगे।

(ख) सबो झन ल बड़ निक लागिस।

(ग) थोरिक बेर म सबोझन थक गें।

'क' वाक्य म 'चौरा' संज्ञा के विशेषता 'चौरस'' शब्द, ''ख'' वाक्य म ''निक'' संज्ञा के विशेषता ''बड़'' शब्द, ''ग'' वाक्य म ''बेर'' संज्ञा के विशेषता ''थोरिक'' शब्द ह बतावत हे। चौरस, बड़ अउ थोरिक बिशेषता बतइया शब्द आय। एला विशेषण कहिथें।

संज्ञा अऊ सर्वनाम के विशेषता बतइया शब्द विशेषण कहाथे।

प्रश्न (5) खाल्हे म लिखाय शब्द मन ल पढ़व अउ छाँट के डब्बा म लिखव

चमेली, ओला, सुग्घर, चौंरस, बड़, थोरिक, मँय हा, ओखर, तँय हा, गंगा, बबलू, डंडा

संज्ञा	सर्वनाम	विशेषण

3NPID3

योग्यता विस्तार –

- तुमन ल जेन खेल पसंद हे, ओकर बारे म आठ वाक्य लिखव।
- सोचव अउ बतावव, कहूँ तुहर पारा–परोस के लइका मन तुमन ल अपन संग नइ खेलाही त तुमन ल कइसे लागही?
- खेल ले का–का फायदा हे? एक–एक ठन फायदा ल बतावव।
- आने–आने खेल के गीत ल अपन, कापी म लिखव अउ कक्षा म सुनावव।
- घर भितरी के खेल अउ बाहिर के खेल मन के अलग–अलग नाम लिखव।